MAHARAJA GANGA SINGH UNIVERSITY
BIKANER (RAJ.)

Syllabus

Scheme of Examination and Courses of Study

2018-19
2019-20

FACULTY OF SOCIAL SCIENCES

M.A., P.G. Diploma and Certificate Course in Vanshawali (Genealogy) and Community History

COMMITTEE OF COURES ON GENEALOGY AND COMMUNITY HISTORY
DEPARTMENT OF HISTORY
MAHARAJA GANGA SINGH UNIVERSITY
BIKANER

सेमेस्टर–प्रथम (Semester-I)

वंशावली अध्ययन एवं सामुदायिक इतिहास में स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं प्रमाण–पत्र का संयुक्त पाठ्यक्रम

Syllabus of the Integrated Study Programme for Certificate Course, P.G. Diploma and M.A. in Vanshawali (Genealogy) and Community History

टिप्पणी : प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न–पत्र अंकों का विभाजन अलग से दर्शाया गया है।

क्र. सं.	पेपर कोड	पेपर का नाम/विवरण	अधिकतम अंक	सैद्धांतिक	आंतरिक मूल्यांकन	शोध प्रबंध/सर्वेक्षण	प्रयोगात्मक कार्य व मौखिक परीक्षा
1.	GCH-01	इतिहास की अवधारणा एवं स्रोत	100	60	25	–	15
2.	GCH-02	भारतीय समाज में जाति उत्पत्ति एवं वंशावली लेखन से जुड़ी जातियां	100	60	25	–	15
3.	GCH-03	वंशावली लेखन पद्धतियां एवं वंश लेखन	100	60	25	–	15
4.	GCH-04	सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित केस स्टडी	100	–	–	75	25

नोट :

(1) एक सेमेस्टर का पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने व परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्यार्थी को प्रमाण–पत्र, दो सेमेस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा व सभी चारों सेमेस्टर की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर विद्यार्थी को एम.ए. की उपाधि (डिग्री) प्रदान की जावेगी।

(2) प्रमाण–पत्र हेतु पढ़ने वाले विद्यार्थी की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता सीनियर सैकण्डरी, स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं एम.ए. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को स्नातक होना आवश्यक है।

(3) पाठ्यक्रम में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय से समय–समय पर जारी सभी परीक्षा एवं मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्त नियम परिनियम लागू होंगे।

सेमेस्टर–द्वितीय (Semester-II)

एम.ए. वंशावली अध्ययन एवं सामुदायिक इतिहास में स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं प्रमाण–पत्र का संयुक्त पाठ्यक्रम

टिप्पणी : प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न–पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न पत्र के सैद्धांतिक, प्रायोगिक व मौखिक परीक्षा के अंक अलग से निम्नवत दर्शाए गए हैं।

क्र. सं.	पेपर कोड	पेपर का नाम/विवरण	अधिकतम अंक	सैद्धांतिक	आंतरिक मूल्यांकन	शोध प्रबंध/ सर्वेक्षण	प्रयोगात्मक कार्य व मौखिक परीक्षा
5.	GCH-05	पौराणिक वांङमय में वंशावलियां	100	60	25	–	15
6.	GCH-06	राजस्थान की रियासतों का इतिहास एवं वंशावली लेखन	100	60	25	–	15
7.	GCH-07	भारतीय मानव प्रवर्जन एवं वंशावलियां	100	60	25	–	15
8.	GCH-08	सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित केस स्टडी : जाति/ समुदाय विशेष पर केन्द्रित	100			75	25

सेमेस्टर–तृतीय (Semester-III)

वंशावली अध्ययन एवं सामुदायिक इतिहास में स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं प्रमाण–पत्र का संयुक्त पाठ्यक्रम

टिप्पणी : प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न पत्र के अंकों का विभाजन अलग से दर्शाया गया है।

क्र. सं.	पेपर कोड	पेपर का नाम/विवरण	अधिकतम अंक	सैद्धांतिक	आंतरिक मूल्यांकन	शोध प्रबंध/ सर्वेक्षण	प्रयोगात्मक कार्य व मौखिक परीक्षा
9.	GCH-09	पाठलोचन, पाठशुद्धि एवं वंशावली सम्पादन	100	60	25	–	15
10.	GCH-10	वंशावली परम्परा एवं संरक्षण	100	60	25	–	15
11	GCH-11	राजस्थान का सामाजिक इतिहास : जातियों एवं समुदायों के विशेष संदर्भ में	100	60	25	–	15
12.	GCH-12	सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित केस स्टडी	100	–	–	75	25

सेमेस्टर–चतुर्थ (Semester-IV)

वंशावली अध्ययन एवं सामुदायिक इतिहास में स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं प्रमाण–पत्र का संयुक्त पाठ्यक्रम

टिप्पणी : प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न पत्र के अंकों का विभाजन अलग से दर्शाया गया है।

क्र. सं.	पेपर कोड	पेपर का नाम/विवरण	अधिकतम अंक	सैद्धांतिक	आंतरिक मूल्यांकन	शोध प्रबंध/ सर्वेक्षण	प्रयोगात्मक कार्य व मौखिक परीक्षा
13	GCH-13	राजस्थानी भाषा, साहित्य का इतिहास	100	60	25	–	15
14.	GCH-14	सामाजिक/जातीय इतिहास में प्रयुक्त शोध तकनीकें एवं पद्धतियां	100	60	25	–	15
15	GCH-15	राजस्थान में सामाजिक विचार, दर्शन एवं संस्थाएं	100	60	25	–	15
16.	GCH-16	सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित केस स्टडी	100	–	–	75	25

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – प्रथम

इतिहास की अवधारणा एवं स्रोत

न्यूनतम अंक : 36 औसत एवं प्रत्येक पेपर में अलग से 25

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : इतिहास का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं अन्य साहित्य, प्राचीन ग्रीक एवं रोमन ऐतिहासिकी, मध्यकालीन व आधुनिक यूरोप में इतिहास लेखन की परम्परा एवं तकनीक

इकाई–2 : प्राचीन भारतीय वांङमय, वेद, उपनिषद, ब्राह्मण पुराण, संहिताएं (धर्मशास्त्र), भारत में इतिहास लेखन पद्धति एवं दर्शन।

इकाई–3 : इतिहास के विभिन्न स्रोत एवं वंशावली, वैदिक ऋषि परम्परा, यज्ञ, वंशावली, पट्टावली – वंशावली स्वरूप एवं ऐतिहासिक महत्व। मध्यकालीन भारत में वंशावली साहित्य का विकास स्थानीय शासकों व राजवंशों के संदर्भ में।

इकाई–4 : इतिहास लेखन में वंशावलियों का उपयोग तथा समसामयिक महत्व।

इकाई–5 : राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता में वंशावलियों की भूमिका।

संदर्भ ग्रंथ :

1. स्कन्ध पुराण
2. धर्मशास्त्र का इतिहास : पी.वी. काणे
3. धर्मशास्त्र कोश : डॉ. राजबली पाण्डेय
4. श्रीमद्भागवत स्कन्ध दशम अध्याय
5. प्राचीन भारत की संस्कृति एवं सभ्यता : दामोदर धर्मानन्द कौसांबी

6. प्राचीन भारतीय शासन एवं विधि : डॉ. शिवस्वरूप सहाय
7. अद्‌भुत भारत : ए.एल. बाशम
8. प्राचीन भारतीय मुद्राएं : डॉ. राजवन्त राव, डॉ. प्रदीप कुमार राव
9. प्राचीन भारतीय सिक्के : डॉ. शिवस्वरूप सहाय
10. भारतीय इतिहास एवं संस्कृति : यज्ञदत्त शर्मा
11. प्राचीन भारत का नवीनतम मूल्यांकन : वातात्मा मिश्र
12. प्राचीन भारत : राधाकुमुद मुखर्जी
13. वैदिक ऋषि परम्परा एवं वंशावलियां
14. वैदिक संस्कृत : सत्यकेतु विद्यालंकार
15. इतिहास दर्शन : डॉ. झारखण्ड चौबे
16. अभिलेख एवं शिलालेख
17. वाल्मीकि रामायण : आनन्द कुमार
18. चाणक्य सूत्र प्रदीप : चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय (स्मृति साहित्य, मनु याज्ञवल्क्य, मीताक्षरा टीका, जीमुतवाहन)
19. ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र : एस.सी.बंसजी

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – द्वितीय

भारतीय समाज में जाति उत्पत्ति एवं वंशावली लेखन से जुड़ी जातियां

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : भारतीय समाज की संरचना एवं उसके प्रमुख घटक (जाति–स्वरूप व्यवस्था, उद्‌भव कारण एवं परिणाम)

इकाई–2 : पौराणिक युग की सामाजिक संरचना, लेखन का आधार, पुराणों में वंशलेखन का इतिहास

इकाई–3 : पौराणिक वांङमय में जातियों का उद्‌भव एवं विकास : स्कन्धपुराण एवं अन्य सम्बन्धित स्रोत

इकाई–4 : राजपूत युग में वंश लेखन, जाति आधारित भारतीय समाज की संरचना एवं नवीन जातियों का समायोजन एवं उदय, मध्यकालीन समाज में जाति व्यवस्था में परिवर्तन एवं बदलती भूमिका

इकाई–5 : जातीय इतिहास में छत्तीस वंशों की वंश परम्परा एवं वंशावलियां

संदर्भ ग्रंथ :

1. जाति भास्कर
2. राजपूत वंशावलियां
3. रिपोर्ट मर्दुमशुमारी मारवाड़ – 1891
4. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास : शिवकुमार
5. राजस्थान की जातियों का इतिहास : सुखवीर सिंह गहलोत
6. वंश भास्कर : सूर्यमल्ल मिश्रण

7. इण्डियन सोसायटी : एस.सी. दुबे पब्लिकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, वर्ष 1990
8. भारतीय समाज का तात्विक एवं ऐतिहासिक विवेचन : गोविन्द चन्द पाण्डे, पब्लिकेशन – नेशनल पब्लिकेशन, दरियागंज, दिल्ली
9. समाज और संस्कृति : श्यामचंद दुबे, पब्लिकेशन – वाणी प्रकाशन, वर्ष 1996
10. भारतीय इतिहास बोध एवं संस्कृति, श्यामचंद दुबे, पब्लिकेशन – राधाकृष्ण पब्लिकेशन, वर्ष 1991
11. दर्शन, धर्म एवं समाज, राजाराम शास्त्री, पब्लिकेशन – आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान, वाराणसी, वर्ष 1994
12. प्राचीन भारत में सामाजिक जीवन – जयशंकर मीणा
13. भारतीय संस्कृति में आधार स्रोत : डॉ. पं. रामशरण गौड़, पब्लिकेशन – स्वराज प्रकाशन, वर्ष 1998

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – तृतीय

वंशावली लेखन पद्धतियां एवं वंश लेखन

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : सृष्टि सृजन एवं मानव के उद्‌भव की भारतीय अवधारणा।

इकाई–2 : वंश लेखन की आवश्यकता, वंश लेखन की प्रारम्भिक अवस्था, वाचन से लेखन की ओर भारतीय समाज व्यवस्था, वंश लेखन

इकाई–3 : वंश लेखन की पद्धतियां (जन्म से मृत्यु तक) वंशावली परम्परा एवं तीर्थ।

इकाई–4 : भारतीय समाज में वंश लेखन से जुड़ी जातियां, वर्तमान युग में वंशावली लेखन की दशा एव ंदिशा

इकाई–5 : वंशावलियों का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक राष्ट्रीय महत्त्व।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास : डॉ. रामशरण शर्मा
2. शूद्रों का प्राचीन इतिहास : डॉ. रामशरण शर्मा
3. वंशावली परम्परा महत्त्व एवं प्रासंगिकता, राजपूत जातियों का इतिहास : टाड कृत सम्पादक – डॉ. देवीलाल पालीवाल, राजस्थानी कथाकार, जोधपुर, वर्ष 2002
4. भारत के प्राचीन राजवंश – 3 वोल्यूम : पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ, सम्पादक – भगवतीलाल राजपुरोहित, प्रकाशन – पब्लिकेशन स्कीम एस–7, मिश्राजी का रास्ता, जयपुर, वर्ष 2000
5. राजस्थानी जातियों का इतिहास : रमेशचन्द्र गुणार्थी, आर्य बुक सेलर, पुरानी मण्डी, अजमेर, वर्ष 1997

6. कास्ट ऑफ मारवाड़ : मुंशी हरदयाल, परिचय – कोमल कोठारी, पब्लिकेशन बुक ट्रेजर, जोधपुर, वर्ष 1984
7. शिशोद वंशावली एवं राजस्थान के रजवाड़ों की वंशावलियां : डॉ. हुकमसिंह भाटी, पब्लिकेशन – प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
8. राजस्थानी लोक संस्कृति एवं कायमखानी समाज : डॉ. हबीब खां गौराण, पब्लिकेशन – गौराण प्रकाशन, जोधपुर
9. हिस्ट्री ऑफ सिरोही स्टेट : डॉ. विजय कुमार, पब्लिकेशन – बुक ट्रेजर, जोधपुर, वर्ष 1998
10. चौहान राजवंश का उद्‌भव का वृहद इतिहास : डॉ. विध्येराज चौहान, पब्लिकेशन – राजस्थानी ग्रंथागार, वर्ष 2007
11. कच्छावों का इतिहास : देवीसिंह मण्डावा, पब्लिकेशन – राजस्थानी ग्रंथागार, वर्ष 2001
12. माँ शाकम्भरी का मंदिर एवं शाकम्भर अजमेरू का इतिहास : देवीसिंह मण्डावा, पब्लिकेशन – राजस्थानी ग्रंथागार
13. कच्छावा री ख्यात वंशावली : डॉ. हुकमसिंह भाटी, पब्लिकेशन – राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, वर्ष 2003
14. भटनेर का इतिहास : डॉ. हरिसिंह भाटी, पब्लिकेशन – कवि प्रकाशन, बीकानेर, वर्ष 2002
15. द हिस्टोरियन्स एण्ड सोर्सेज ऑफ द हिस्ट्री ऑफ राजस्थान : प्रो. जी.एन.शर्मा
16. चारण साहित्य परम्परा : डॉ. श्याम सिंह रत्नावत, राजस्थान अध्ययन केन्द्र, राज. वि.वि., जयपुर, वर्ष 2001

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – चतुर्थ

प्रयोगात्मक प्रश्न–पत्र : चयनित जाति या जातियों के समूह पर केस स्टडी सर्वेक्षण एवं क्षेत्रिय अध्ययन पर आधारित : वंशावली एवं सामुदायिक इतिहास के विशेष संदर्भ में

चतुर्थ प्रश्न पत्र

लघु शोध प्रबंध एवं कार्यक्षेत्र में सर्वेक्षण

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 100

इस प्रश्न पत्र में वंशावली साहित्य व सामुदायिक/जातीय इतिहास से जुड़े विषयों में से विभागाध्यक्ष की अनुमति से लगभग 40 से 50 पृष्ठों का लघु शोध प्रबंध कार्य क्षेत्र में सर्वेक्षण व फील्ड स्टडी से संकलित रचनाओं व आंकड़ों के आधार पर लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त/नामित शोध निर्देशक के दिशा–निर्देशन में ही लिखना होगा। लघु शोध प्रबंध की कम्प्यूटर टाईप/टंकित तीन प्रतियां सत्रांत में विभागीय कार्यालय में प्रस्तुत करनी होगी।

यह शोध प्रबंध 100 अंकों का होगा जिसमें 75 अंक लघुशोध प्रबंध में संकलित सूचनाओं व शोध पद्धति की गुणवत्ता को ध्यान में रख कर बाहरी परीक्षक द्वारा दिए जायेंगे तथा 25 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी जिसमें एक बाहरी विषय विशेषज्ञ तथा एक विभागाध्यक्ष द्वारा नामित शिक्षक सम्मिलित होंगे।

संदर्भ ग्रंथ :

1. मोयलों का इतिहास : रतनलाल मिश्र
2. कायमखानियों का इतिहास : रतनलाल मिश्र
3. चंचनामा : जान कवि
4. ओलख : डॉ. सुखदेव राव
5. राठौड़ों की ख्यात
6. बीकानेर री ख्यात

7. मारवाड़ की ख्यात
8. मेवाड़ का इतिहास
9. जोधपुर राज्य का इतिहास
10. बीकानेर राज्य का इतिहास
11. मूथौ नैयण सी री ख्यात – सम्पादित मनोहर सिंह राणावत
12. मारवाड़ परगना री विगत – मुहता नैणसी
13. राणीमंगा भाट : कु. महेन्द्र सिंह नागर
14. मानवीय साक्ष्य विधि : प्रो. एस.एल. शर्मा स्मृति – साहित्य – मनु, याज्ञवल्क्य, मीताक्षरा
15. समाज का दार्शनिक परिशीलन : डॉ. यशदेव शाल्य, पब्लिकेशन – रावत पब्लिकेशन, जयपुर

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – पंचम

पौराणिक वांड्मय में वंशावलियां

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : पौराणिक साहित्य का अर्थ; परिभाषा एवं स्वरूप, पौराणिक एवं वैदिक साहित्य के लेखन की परम्परा; पुराण में वर्णित वंश – देव वंश, ऋषि, यक्ष वंश, नाग वंश, दानव वंश एवं मानव वंश एवं अन्य वंशावलियां

इकाई–2 : सर्ग और प्रतिसर्ग की अवधारणा एवं मनु व्यवस्था

इकाई–3 : सृष्टि सृजन एवं चौदह मनु की अवधारणा

इकाई–4 : मनु एवं मनवन्तर – चौदह मनुओं के युग एवं काल विभाजन

इकाई–5 : विभिन्न वंश एवं उनका काल निर्णय (मनवन्तरों के संदर्भ में)

संदर्भ ग्रंथ :

1. ब्रह्मवैवर्तपुराण : वेदव्यास प्रणीत, अनुवाद – तारिणीश झा एवं बाबूराम उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2002 ई., अनुवाद पं. श्रीरामनारायण दत्त शास्त्री एवं रामाधार शुक्ल, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. ब्रह्माण्डपुराण : वेदव्यास प्रणीत, वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, 1992, संक्षिप्त संस्करण, सम्पादक – डॉ. चमनलाल गौतम, संस्कृति संस्थान ख्वाजाकुतुब (वेदनगर), बरेली, 2001
3. भविष्यपुराण : वेदव्यास प्रणीत, अनुवाद – बाबूराम उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग 1995, अनुवाद संयोजक महाप्रभुलाल गोस्वामी, गीताप्रेस, गोरखपुर
4. भागवत महापुराण : वेदव्यास कृत सम्पादक – हनुमान प्रसाद पौद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1999
5. मत्स्यपुराण : वेदव्यास प्रणीत, गीताप्रेस गोरखपुर, 2002

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – पंचम

राजस्थान की रियासतों का इतिहास एवं वंशावली लेखन

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : राजस्थान की रियासतों से सम्बद्ध स्रोत – पुरातात्विक, अभिलेखागारीय एवं साहित्यिक। राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांत, राजपूत काल का प्रारम्भिक चरण (8वीं से 12वीं सदी तक) एवं विभिन्न राजवंश–संक्षिप्त परिचय।

इकाई–2 : सपादलक्ष के चौहान – विग्रहराज चतुर्थ, पृथ्वीराज चौहान तृतीय; रणथम्भौर के चौहान – हम्मीरदेव एवं मुस्लिम संघर्ष। मेवाड़ के गुहिल – बप्पा रावल, रतनसिंह; सिसोदिया–हम्मीर, कुम्भा, सांगा, उदयसिंह, प्रताप एवं राजसिंह, मेवाड़ एवं मुगल संघर्ष।

इकाई–3 : आमेर के कच्छवाहा – भारमल, मानसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह एवं सवाई जयसिंह; मारवाड़ के राठौड़ – प्रारम्भिक शासकों से लेकर जोधा तक, मालदेव, चन्द्रसेन, जसवंत सिंह, अजीतसिंह, मानसिंह–द्वितीय; बीकानेर के राठौड़ – राव बीका, रायसिंह एवं सूरतसिंह, हाड़ौती के हाड़ा – राव सुर्जन हाड़ा; ब्रिटिश सत्ता से सहायक संधि।

इकाई–4 : वंशावली लेखन परम्परा – विधियां, समस्याएँ व निराकरण के उपाय, ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में वंशावलियां – राजपूत शासकों की वंशावलियां, मुस्लिम वंशावली लेखन परम्परा – मुगल शासकों की वंशावलियां एवं सूफी संतों की वंशावलियां।

इकाई–5 : वंशावली लेखक वर्ग – राव, भाट, बड़वा एवं चारण; वंशावली लेखन एवं लिपि ज्ञान, वंशावलियों में अन्तर्निहित विज्ञान; वंशावली लेखन का साहित्यिक समृद्धि में योगदान।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Ojha, G.H. : Rajasthan Ka Itihas. Vols. I and II; Udaipur Vol. II, Part I; Dungarpur Part II; Banswara, Part III; Pratapgarh, Vol. IV, Part I and II; Jodhpur, Vol. V, Part I and II; Bikaner, Part-I.
2. Sharma, M.L. : Kota Rajya Ka Itihas, Vols. I and II
3. Tod, J. : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vols. I and II, edited by Crooke.
4. Reu, B.N. : History of Marwar, Vol. I and II.
5. Banerjee, A.C. : Rajput Studies.
6. Raghubir Singh : Purva Adhunik Rajasthan
7. Sharma, G.N. : Mewar and Mughal Emperors
8. Shyamal Dass : Vir Vinod, Vol. I to IV
9. Asopa, R.K. : Marwar Ka Mool Itihas.
10. Bhargava, V.S. : Marwar and Mughals (Hindi ed. also)
11. Vyas, R.P. : Maharana Raj Singh
12. Sharma, G.N. : Rajasthan K Itihas Ke Srota
13. G.N. Sharma : Social Life in Medieval Rajasthan (1500-1800 AD), Agra
14. G.N. Sharma : Rajasthan Ka Sanskritik Itihas, Raj. Hindi Granth Academy, Jaipur (Relevant Portion), 1965
15. G.N. Sharma : A Bibliography of Medieval Rajasthan (Social and Cultural) Agra, 1965.
16. Dasrath Sharma : Rajasthan Through The Ages, Vol. I, Rajasthan State Archives, Bikaner, 2014.
17. G.N. Sharma : Rajasthan Throught The Ages, Vol. II, Rajasthan State Archives, Bikaner, 2014.
18. M.S. Jain : Rajasthan Through the Ages, Vols. III, Rajasthan State Archives, Bikaner, 1997.
19. Series of Rajasthan District Gazetteers, Published by Directorate District Gazetteers, Govt. of Rajasthan, Jaipur.
20. Census Report of Rajputana State and Ajmer-Merwara (1818-1951).
21. B.L. Bhadani : Peasants, Artisans and Interpreneurs - Economy of Marwar in the Seventeeth Century, Jaipur.

22. G.S. Sharma : Madhyakalin Bhartiya Samajik Arthik Avam Rajnitik Sansthayen, Raj. Hindi Granth Academy, Jaipur, 1992.
23. Kalu Ram Sharma : Unnisvi Sadi Main Rajasthan Ka Samajik tatha Arthik Jeevan (Hindi).
24. Dilbagh Singh : The State Landlord and the Peasants in the 18th Cntury, Manohar, Delhi, 1990
25. Dr. Kamla Malu : Famines in Rajasthan
26. Dr. Pema Ram : Madhyakalin Rajasthan Main Dharmik Andolan
27. K.S. Saxena : Political Movement and Awakening in Rajasthan.

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – सप्तम

भारतीय मानव प्रव्रजन एवं वंशावलियां

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : प्रव्रजन – अर्थ, परिभाषा, कारण, महत्त्व एवं प्रभाव

इकाई–2 : प्रव्रजन का घटना क्रम एवं मानव जाति का इतिहास

इकाई–3 : प्राचीन भारत के प्रमुख प्रव्रजन

इकाई–4 : आधुनिक भारत के प्रमुख प्रव्रजन

इकाई–5 : प्रव्रजित जातियों के वंश एवं वंशावलियां

संदर्भ ग्रंथ :

1. मनुस्मृति : मनु कृत, जीवानन्द विद्यासागर, कोलकाता, 1874, हिन्दी, अनुवाद – गणेशदत्त पाठक, ठाकुर प्रसाद बुक सेलर, वाराणसी, संस्करण 1991
2. वामनपुराण : वेदव्यास प्रणीत, काशीराज व्यास, रामनगर, बनारस, 1968
3. वायुपुराण : वेदव्यास प्रणीत, अनुवादक – रामप्रताप त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1987
4. विष्णु पुराण : श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान, ख्वाजाकुतुब (वेदनगर) बरेली, 1999
5. स्कन्द पुराण : वेदव्यास प्रणीत, खेमराज श्रीकृष्णदास, मुम्बई, 1910, वेंकटेश्वर संस्करण का पुनर्मुद्रण, भूमिका एवं सम्पादन – डॉ. आर.एन. शर्मा, नाग पब्लिकेशन, दिल्ली, 1996 (संक्षिप्त अनुवाद, गीताप्रेस गोरखपुर, 2002)
6. हरिवंश पुराण : वेदव्यास प्रणीत, टीकार – रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम', गीताप्रेस, गोरखपुर, 1999

प्रश्नपत्र – अष्टम

Case Study Based on Survey and Field Work

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 100

इस प्रश्न पत्र में वंशावली साहित्य व सामुदायिक/जातीय इतिहास से जुड़े विषयों में से विभागाध्यक्ष की अनुमति से लगभग 40 से 50 पृष्ठों का लघु शोध प्रबंध कार्य क्षेत्र में सर्वेक्षण व फील्ड स्टडी से संकलित रचनाओं व आंकड़ों के आधार पर लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त/नामित शोध निर्देशक के दिशा–निर्देशन में ही लिखना होगा। लघु शोध प्रबंध का शीर्षक एवं सर्वेक्षण का क्षेत्र प्रथम सेमेस्टर से अलग होना चाहिए। लघु शोध प्रबंध की कम्प्यूटर टाईप/टंकित तीन प्रतियां सत्रांत में विभागीय कार्यालय में प्रस्तुत करनी होगी।

यह शोध प्रबंध 100 अंकों का होगा जिसमें 75 अंक लघुशोध प्रबंध में संकलित सूचनाओं व शोध पद्धति की गुणवत्ता को ध्यान में रख कर बाहरी परीक्षक द्वारा दिए जायेंगे तथा 25 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी जिसमें एक बाहरी विषय विशेषज्ञ तथा एक विभागाध्यक्ष द्वारा नामित शिक्षक सम्मिलित होंगे।

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – नवम्

पाठालोचन, पाठशुद्धि एवं वंशावली सम्पादन

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : पाठलोचन–विज्ञान एवं लेखन परम्परा (पाठ शुद्धि पाठ, विकृत पुनः शोधन आदि)

इकाई–2 : भारत में प्रचलित वंशलेखन की प्रमुख लिपियां, शब्द रचना, वाक्य विन्यास, शब्द रूप इत्यादि।

इकाई–3 : बहियों में धार्मिक प्रतीक चिह्न, स्वास्तिक दान चित्रादि, बही लेखन में हसियां एवं सीटों में रेखा का महत्त्व।

इकाई–4 : परम्परागत लेखन पद्धतियों पर विज्ञान एवं तकनीक का प्रभाव, सांदर्भिक चुनौतियां एवं समाधान।

इकाई–5 : वंशावली संरक्षण में उन्नत प्रविधियां, विज्ञान एवं तकनीक का उचित प्रयोग, यथा सीडी, छायाप्रति

संदर्भ ग्रंथ :

1. पाठालोचन एवं उसके सिद्धांत : डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा
2. पाण्डुलिपि – विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – दस

वंशावली एवं संरक्षण परम्परा

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : वंशलेखन की वाचिक एवं मौखिक परम्परा – अर्थ, परिभाषा, प्रकार

इकाई–2 : वंशावलियों की मौखिक परम्परा – भारतीय जनजातियों एवं अन्य सामुदायिक जातियों के संदर्भ में

इकाई–3 : वंशावलियों लेखन एवं संरक्षण में तीर्थ पुरोहितों का योगदान – प्रमुख तीर्थ, लेखन विधा। संरक्षण एवं संवर्द्धन की पद्धतियां।

इकाई–4 : वर्तमान के बदलते वैश्विक परिदृश्य में वंशलेखन की आवश्यकता, चुनौतियां एवं संभावित प्रयास।

इकाई–5 : वंशावली संरक्षण हेतु सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयास

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. ज्वाला प्रसाद मिश्र : अष्टादश पुराण दर्पण, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1993
2. डॉ. रामशरण गौड़ : आधुनिक कृष्ण काव्य में पौराणिक आख्यान, विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1984
3. रमाशंकर भट्टाचार्य : इतिहास–पुराण का अनुशीलन, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1963
4. डॉ. अवधबिहारी लाल अवस्थी : गरूडपुराण – एक अध्ययन, कैलाश प्रकाशन, लखनउ, 1968
5. डॉ. हेमवती शर्मा : नारदपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन, बांकेबिहारी प्रकाशन, आगरा, 1999
6. डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी : पुराण पर्यालोचनम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1976

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – ग्यारह

राजस्थान का सामाजिक इतिहास : जातियों एवं समुदायों के विशेष संदर्भ में

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : सिंधु घाटी सभ्यता का समकालीन राजस्थान समाज एवं उसकी रचना

इकाई–2 : वैदिक, उत्तर वैदिक कालीन सभ्यता व संस्कृति का राजस्थान पर प्रभाव, राजस्थान में प्रमुख गणराज्य एवं उनकी सामाजिक संरचना

इकाई–3 : शक, हूण, कुषाण व इण्डो ग्रिक्स के आक्रमण–विदेशी तत्त्वों का राजस्थानी समाज में समायोजन, जैन एवं बौद्ध संस्कृति का राजस्थान की सामाजिक संरचना पर प्रभाव एवं 100–700 ए.डी. के मध्य राजस्थान की प्रमुख जातियां एवं समुदाय/वर्ण व्यवस्था

इकाई–4 : पूर्व मध्यकाल में क्षत्रिय/राजपूत कुलों का अभ्युदय, मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप क्षत्रिय कुलों का पराभाव, मध्यकाल में नई जातियों व समुदायों का उदय व इसका समाज पर प्रभव। अंग्रेजी सत्ता व शासन का जाति व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण व इसका समाज पर प्रभाव।

इकाई–5 : राजस्थान के प्रमुख राजवंशों की वंशावलियों का सर्वेक्षण : सिसोदिया राठौड़, सोलंकी कछवाहा, चौहान समुदायों के विशेष संदर्भ में।

संदर्भ ग्रंथ :

1. जेम्स टॉड : एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1–3
2. रामशरण शर्मा : प्रारम्भिक भारत का परिचय, 2016
3. रोमिला थापर : एनसिएन्ट इण्डियन सोशल हिस्ट्री, 1978
4. रोमिला थापर : अर्ली इण्डिया फ्रॉम ऑरिजिन्स टू 1300 ए.डी.
5. रामशरण शर्मा : शूद्राज इन एनसिएंट इण्डिया, 2002
6. जे.एच. ह्यूटन : कास्ट्स इन इण्डिया, 1963
7. सुविरा जायसवाल : कास्ट – ओरिजिन्स, फंक्शन्स एण्ड डाइमेन्शन्स ऑफ चेन्ज, मनोहर, नई दिल्ली, 1998
8. आर.सी. मजूमदार, एच.सी. रायचौधरी एवं के.के.दत्ता : एन एडवान्स्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 1974
9. डी.डी. कोशाम्बी : एन इन्ट्रोडक्शन टू दी स्टडी ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, 1962
10. जी.एन. शर्मा : सोशल लाईफ इन मिडिवल राजस्थान
11. दशरथ शर्मा, जी.एन. शर्मा एवं एम.एस. जैन : राजस्थान थ्रू दी एजेज, भाग 1, 2 एवं 3
12. एस.के.शर्मा एवं उषा शर्मा : राजस्थान थ्रू दी एजेज, भाग 1–4
13. डी.सी. शुक्ला : अर्ली हिस्ट्री ऑफ राजस्थान
14. सी.वी. वेध्या : अर्ली हिस्ट्री ऑफ राजपूत्स
15. के.डी. अर्सकाइन : चीफ्स एण्ड लीडिंग फेमेलीज इन राजपूताना
16. पं. गौरीशंकर हीराचंद औझा : राजपूतकालीन संस्कृति
17. जगदीश सिंह गहलोत : राजस्थान के राजवंशों का इतिहास
18. विश्वेश्वरनाथ रेउ : भारत के प्राचीन राजवंश, भाग 1–3
19. मुंशी हरदयाल : मरदुमशुमारी राज मारवाड़, 1891 ई.
20. रमेशचन्द्र गुणार्थी : राजस्थानी जातियों की खोज

प्रश्नपत्र – बारह

Case Study based on Survey and Field Work

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 100

इस प्रश्न पत्र में वंशावली साहित्य व सामुदायिक/जातीय इतिहास से जुड़े विषयों में से विभागाध्यक्ष की अनुमति से लगभग 40 से 50 पृष्ठों का लघु शोध प्रबंध कार्य क्षेत्र में सर्वेक्षण व फील्ड स्टडी से संकलित रचनाओं व आंकड़ों के आधार पर लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त/नामित शोध निर्देशक के दिशा–निर्देशन में ही लिखना होगा। लघु शोध प्रबंध का शीर्षक एवं सर्वेक्षण का क्षेत्र प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर से अलग होना चाहिए। लघु शोध प्रबंध की कम्प्यूटर टाईप/टंकित तीन प्रतियां सत्रांत में विभागीय कार्यालय में प्रस्तुत करनी होगी।

यह शोध प्रबंध 100 अंकों का होगा जिसमें 75 अंक लघुशोध प्रबंध में संकलित सूचनाओं व शोध पद्धति की गुणवत्ता को ध्यान में रख कर बाहरी परीक्षक द्वारा दिए जायेंगे तथा 25 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी जिसमें एक बाहरी विषय विशेषज्ञ तथा एक विभागाध्यक्ष द्वारा नामित शिक्षक सम्मिलित होंगे।

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – तेरह

राजस्थानी भाषा, साहित्य का इतिहास

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति एवं विकास, क्षेत्र विस्तार, राजस्थानी भाषा की विशेषताएँ, विभिन्न बोलियां

इकाई–2 : राजस्थानी साहित्य का इतिहास – काल विभाजन, प्रमुख रचनाकार, रचनाएँ, प्रवृत्तियां, काव्य शैलियां, आख्यान – काव्य लोक साहित्य।

इकाई–3 : राजस्थानी साहित्य का आदिकाल

इकाई–4 : राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल, ख्यात साहित्य एवं वंशावलियां

इकाई–5 : राजस्थानी साहित्य का आधुनिक काल

संदर्भ ग्रंथ :

1. अगरचंद नाहटा : राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परम्परा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. पूनम दईया : राजस्थानी बात साहित्य, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
3. सांस्कृतिक राजस्थान : अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता
4. मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
5. नरोत्तमदास स्वामी : राजस्थानी का संक्षिप्त व्याकरण, शार्दूल रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर
6. रामकरण आसोपा : राजस्थानी व्याकरण

7. जॉर्ज ए. ग्रियर्सन : राजस्थानी का सर्वेक्षण (अनुवाद डॉ. आत्माराम जाजोदिया)

8. बद्रीप्रसाद साकरिया : मुहता नैणसी री ख्यात, भाग 1–4

9. हुकमसिंह भाटी : राठौड़ां री ख्यात, भाग 1–

10. श्यामलदास : वीर विनोद, भाग 1–4

11. पं. गौरीशंकर हीराचंद औझा : राजपूताना का इतिहास (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही आदि)

12. ईश्वर सिंह : राजपूत वंशावली

13. बी.एम. बालियान : जाट/जट वंशावली अथ् गोत्रावली

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – चौदह

सामाजिक/जातीय इतिहास में प्रयुक्त शोध तकनीकें एवं पद्धतियां

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : इतिहास की प्रकृति, उद्देश्य एवं परिभाषा, ग्रीको रोमन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा

इकाई–2 : इतिहास में तथ्यों एवं व्याख्या के बीच सम्बन्ध, इतिहास में वस्तुनिष्ठता एवं पूर्वाग्रह की समस्या, इतिहास विज्ञान है या कला?

इकाई–3 : इतिहास की विषयवस्तु, इतिहास में व्यक्ति विशेष का महत्व। इतिहास का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध।

इकाई–4 : इतिहास के स्रोत – प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत। ऐतिहासिक तथ्यों व आंकड़ों (प्राथमिक व द्वितीयक) का संकलन। क्षेत्र भ्रमण एवं सर्वेक्षण कार्य : मौखिक, ओडियो वीडियो रिकॉर्डिंग, डायरी लिखना, अनुसूची (प्रश्नावली) आदि का उपयोग

इकाई–5 : वंशावली विषय पर विषय का चयन, शोध प्रस्ताव का निर्माण, अध्ययन के स्रोत, संदर्भ सूची, पाद टिप्पणी, शोध कार्य के विभिन्न चरण व शोध कार्य का प्रकाशन।

संदर्भ ग्रंथ :

1. ई.एच. कार : इतिहास क्या है?
2. कोलिंगवुड : द आइडिया ऑफ हिस्ट्री
3. जी.सी. पाण्डे : इतिहास–स्वरूप एवं सिद्धांत
4. शेख अली : हिस्ट्री : इट्स थ्योरी एण्ड मेथड्स
5. झारखण्ड चौबे : इतिहास दर्शन

पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र – पन्द्रह

राजस्थान में सामाजिक विचार दर्शन एवं संस्थाएं

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 60 आंतरिक मूल्यांकन : 25 मौखिक मूल्यांकन : 15

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : सामाजिक संस्थाएं : जाति/वर्ण व्यवस्था, छुआछूत एवं गुलाम प्रथा।

इकाई–2 : राजस्थानी समाज का ढांचा एवं स्तरीकरण, जातियों के स्वरूप एवं व्यवसाय में परिवर्तन एवं इसके परिणाम।

इकाई–3 : परिवार, गोत्र, जाति से पहचान व इन संस्थाओं का वंशावली निर्माण में योगदान।

इकाई–4 : राजस्थान में सामाजिक व धार्मिक आंदोलन, सामंतवाद का उदय एवं पतन, जातिगत सामाजिक सुधार आंदोलन, आर्य समाज, भगत आंदोलन, जनजातियों में सामाजिक व राजनैतिक चेतना का उदय व फैलाव

इकाई–5 : वंशावलियों की वैधानिक स्थिति, उपयोग एवं महत्त्व

संदर्भ ग्रंथ :

1. गोपीनाथ शर्मा : सोशल लाईफ इन मिडीवल राजस्थान
2. के.एस. सिंह : पीपुल ऑफ इण्डिया – राजस्थान, भाग–2
3. मुंशी हरदयाल : कास्ट्स ऑफ मारवाड़
4. दशरथ शर्मा, जी.एन. शर्मा एवं एम.एस. जैन : राजस्थान थ्रू दी एजेज
5. जेम्स टॉड : एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1–3
6. डॉ. प्रकाश व्यास : राजस्थान का सामाजिक इतिहास
7. मोहनलाल गुप्ता : राजस्थान में आरक्षित जातियां
8. रामशरण शर्मा : शूद्रों का प्राचीन इतिहास
9. दिलबाग सिंह : लैण्डलॉर्ड, स्टेट एण्ड पेजेण्ट्स

प्रश्नपत्र – सोलह

Case Study based on Survey and Field Work

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 100

इस प्रश्न पत्र में वंशावली साहित्य व सामुदायिक/जातीय इतिहास से जुड़े विषयों में से विभागाध्यक्ष की अनुमति से लगभग 50 से 60 पृष्ठों का लघु शोध प्रबंध कार्य क्षेत्र में सर्वेक्षण व फील्ड स्टडी से संकलित रचनाओं व आंकड़ों के आधार पर लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त/नामित शोध निर्देशक के दिशा–निर्देशन में ही लिखना होगा। लघु शोध प्रबंध का शीर्षक एवं सर्वेक्षण का क्षेत्र प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सेमेस्टर से अलग होना चाहिए। लघु शोध प्रबंध की कम्प्यूटर टाईप/टंकित तीन प्रतियां सत्रांत में विभागीय कार्यालय में प्रस्तुत करनी होगी।

यह शोध प्रबंध 100 अंकों का होगा जिसमें 75 अंक लघुशोध प्रबंध में संकलित सूचनाओं व शोध पद्धति की गुणवत्ता को ध्यान में रख कर बाहरी परीक्षक द्वारा दिए जायेंगे तथा 25 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी जिसमें एक बाहरी विषय विशेषज्ञ तथा एक विभागाध्यक्ष द्वारा नामित शिक्षक सम्मिलित होंगे।